H.W पाठ-३ हंस और कछुआ

27/9/21

पाठ का सारांश

शब्द - १२२ (122)

मगध देश में फुल्लोत्पल नामक तालाब में संकट और विकट नाम के दो हंस रहते थे उनका एक मित्र कछुआ था। उस तालाब में बहुत सारी मछलियाँ भी वहाँ रहती थी। एक बार कुछ मछुआरों ने तालाब में मछलियाँ और कछुए को देखकर अगले दिन उन्हें पकड़ने की बात कही। संकट और विकट ने यह बात सुनकर मछलियाँ तथा कछुए को बता दी। कछुए ने हंसों से मदद और अपनी बचाव के लिए कहा। कछुए को उड़ना नहीं आता था। हंसों ने एक योजना बनाई कि वे एक डंडे के सिरों को अपनी-अपनी चोंच में दबा लेंगी और कछुआ डंडे को मुंह से बीच में पकड़ लेगा। उसे न बोलने को मना किया गया था। जब वे एक गाँव के ऊपर से उड़ रहे थे, तो पतंग उड़ाते हुए बच्चों ने देखा। वे उनके पीछे भागने लगे, कोई कहता कि अगर कछुआ गिरगया, तो वह अपने घर ले जाएगा, कछुए से रहा नहीं गया, जैसे ही गुस्से में वह बोलने लगा, वैसे ही नीचे गिरा और मर गया।

कहानी की सीख- हमेशा सोच-विचार कर के कार्य करना चाहिए नहीं तो कछुए जैसा हाल होगा।